भूमिका

मनुष्य की साधनाओं की सबसे उत्तम परिणति संस्कृति है| संस्कृति समाज को संस्कारित करती है| आज सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति बढ़ता अविश्वास और मनुष्य के प्रति मनुष्य की अनास्था ने समाज में अशांति का सृजन किया है| मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहकर ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है| वह अपने परिवार के साथ समाज में रहता है, जहाँ पर व्यक्ति एक दूसरे के सुख-दुःख में सदैव भागीदार होता है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में विद्वान, आचार्य, ब्राह्मण, गुरु इत्यादि का आदर एवं सम्मान करने की परम्परा रही है| माता-पिता के पैर छूना, उनका आशीर्वाद प्राप्त करना, उनका प्यार और स्नेह प्राप्त करना, नहाकर भोजन करना, जमीन पर बैठकर खाना आदि बातों का समुचित ज्ञान हमें भारतीय संस्कृति के द्वारा प्राप्त होता है|

भारतीय संस्कृति में अपने से बड़ों के लिए उचित सम्मान एवं श्रद्धा का विशेष महत्व है| व्यक्ति को अपने घर-परिवार एवं समाज में जीवन जीने के तौर-तरीकों तथा नैतिक मूल्यों का ज्ञान होना परम आवश्यक है, क्योंकि एक आदर्श जीवन जीने के लिये हमें सुसंस्कृत होना अति आवश्यक है| यदि हमारे सामने बड़े खड़े हैं तो उनके सामने हमें नहीं बैठना चाहिए। बड़ों को खाना पहले परोसना एवं बड़ों के आने पर अपना स्थान छोड़ देना जैसी क्रियाएं हमारे दैनिक जीवन में प्रायः देखने को मिलती है| भारतीय संस्कृति में किसी बड़े या बजुर्ग को उनका नाम लेकर नहीं बुलाते हैं| माता-पिता, गुरु, बड़े भाई-बहन, पूज्य सभी स्त्री - पुरुषों इत्यादि को सम्मान देने के लिए हम उनका सादर चरण स्पर्श करते हैं| भारतीय संस्कृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई वस्तु देना होता है तो उसे दाहिने हाथ से दिया जाता है, क्योंकि बायें हाथ से कुछ देना

अपमानजनक माना जाता है| एक सुसंस्कृत मनुष्य को देवी-देवताओं पर चढ़ाया जाने वाला पुष्प कभी सूंघना नहीं चाहिए| हमारी भारतीय संस्कृति का रूप अद्‌वितीय एवं स्थिर है, जिसकी रक्षा का उपादान हम सब पर है| इस संस्कृति के समन्वयवादी तथा उदार नीति ने अन्य सभी संस्कृतियों को अपने अन्दर समाहित करने का सफल प्रयास किया है, साथ ही साथ अपने मूल अस्तित्व को भी संरक्षित किया है| किसी भी राष्ट्र की संस्कृति का प्राण वहां के प्रत्येक व्यक्ति के दिल और आत्मा में विद्‌यमान होता है| मैंने अपने शोध प्रबंध में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि व्यक्ति भारतीय संस्कृति से आच्छादित होकर किस प्रकार से अपने घर-परिवार, समाज, संस्कृति, परम्पराओं, रीति-रिवाजों, जीवन मूल्यों एवं देश की एकता और अखंडता को बनाये रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। उत्तर प्रदेश की धरती में जन्म लेने एवं शिक्षा के कारण मेरा वहां की संस्कृति से लगाव एवं आकर्षण होना स्वाभाविक था| बचपन से ही मुझे कहानियां पढ़ने का शौक था| धीरे-धीरे बढ़ती हुई उम्र के साथ-साथ मेरी कहानियों के प्रति रुचि भी बढ़ती गई| मेरी इस रुचि ने ही मुझे अध्ययन के क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया। लिहाजा मैं अपने अध्ययन के दौरान ही प्रतिष्ठित लेखकों की कहानियां पढ़ने लगा| एम.ए. के दौरान मुझे आचार्य चतुरसेन शास्त्री जी की कुछ कहानियों को पढ़ने का सुअवसर मिला| जैसे- दुखवा मैं कासे कहूं मोरी सजनी, अम्बपालिका, रघुपति सिंह, सोने की पत्नी, भाई की विदाई, मैं तुम्हारी आँखों को नहीं तुम्हें चाहता हूँ इत्यादि। इन कहानियों में वर्णित संस्कृतियों, रीति-रिवाजों, प्रथाओं को समझने के सम्बन्ध में कुछ नया कार्य करने की प्रबल इच्छा हुई| जब मैंने डॉ. अनीता शुक्ल मैडम से अपने शोध कार्य के सम्बन्ध में बात की तो उन्होंने बड़ी ही सहजता व आत्मीयता के साथ विषय पर चर्चा करने के बाद मुझे "आचार्य

चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन" विषय पर कार्य करने का सुझाव दिया|

प्रस्तुत शोध प्रबंध छः अध्यायों में विभक्त है।

प्रथम अध्याय आचार्य चतुरसेन शास्त्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अंतर्गत मैंने सर्वप्रथम उनके जन्म एवं शिक्षा के सम्बन्ध में प्रकाश डाला है| उनका जन्म कब और कहाँ हुआ था? किस परिस्थिति में उनका लालन-पालन हुआ था? किस प्रकार उनकी अभावों के बीच शिक्षा पूर्ण हुई? किन-किन समस्याओं से निपटते हुए उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी करके अपने जीवन को सार्थक किया? आदि सभी बातों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया है| तत्पश्चात उनके कृतित्व- कहानियों, उपन्यासों, गद्य काव्य इत्यादि में वर्णित संस्कृति को दर्शाते हुए उसकी उपयोगिता एवं विभिन्नता में एकता की भावना को प्रस्तुत किया है| शास्त्री जी एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते थे, जिसमें पाप, घृणा, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, शोषण, उत्पीड़न आदि बुराइयाँ न हों| उनकी रचनाओं में वर्णित सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं ऐतिहासिक संस्कृतियों को यथास्थान वर्णन करने का प्रयास किया है| शास्त्री जी का हिंदी साहित्य में क्या स्थान है? इसका वर्णन हिंदी के अन्य लेखकों जैसे - प्रेमचन्द, जैनेन्द्र, वृन्दावन लाल वर्मा, निर्मल वर्मा इत्यादि से तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है| आचार्य जी अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपनी लेखनी के बल पर एक ऐसे विशाल बगीचे को तैयार किया, जिससे आने वाली पीढ़ी दर पीढ़ी उस बगीचे के फल को सदैव ग्रहण करती रहेगी|

द्वितीय अध्याय आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों का सांस्कृतिक अध्ययन में संस्कृति के अर्थ, संस्कृति की परिभाषा एवं

संस्कृति के क्षेत्र के विषय में विस्तार से वर्णन किया गया है| संस्कृति के मुख्य घटकों यथा अहिंसा, सत्यमेव जयते, आध्यात्मिकता, धर्म, रीति-रिवाज एवं परम्पराएँ, प्रकृति प्रेम, संस्कार, आत्मविश्वास इत्यादि पर पर्याप्त प्रकाश डालने का प्रयास किया है| इसी अध्याय में शास्त्री जी की कल्पित एवं बाल कहानियों का भी सांस्कृतिक वर्णन किया गया है| 'रूठी रानी' एक अत्यंत रोचक एवं प्रेरणात्मक कहानी है, जिसमें रावल लुनकरण की पुत्री उमा की वीरता एवं उसके अप्रितम सौन्दर्य के साथ-साथ, संस्कृति पर विभिन्न प्रसिद्ध विद्वानों की परिभाषाएं तथा उसके अर्थ को व्यक्त किया गया है|

तृतीय अध्याय आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों की प्रासंगिकता के अंतर्गत उनकी कहानियों में सांस्कृतिक पुनरुत्थान, नैतिक मूल्य, आदर्शवाद, अवसरवादिता, दुरूह सामाजिक व्यवस्था, व्यक्तिगत जटिलता, सूक्ष्म संवेदनाएं इत्यादि पर विशेष बल दिया गया है| जहां 'रघुपति सिंह' कहानी में वर्णित नैतिक मूल्य हमें जीवन जीने के तौर-तरीके समझाते हैं, वहीं पर 'मास्टर साहब' कहानी में आदर्शवाद की झाँकी प्रस्तुत हुई है | 'बुलबुल' नामक कहानी में राजा के प्रति एक बुलबुल की संवेदनशीलता को प्रस्तुत किया गया है|

चतुर्थ अध्याय चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के पुरुष पात्रों से सम्बंधित है| उनकी कहानियों में पुरुष पात्र समाज के हर वर्ग से लिए गए हैं| मुगलकालीन और राजपूती परक कहानियों में मुगलों तथा राजपूतों के शौर्य, पराक्रम और उनके भीतर की अथाह शक्ति का उल्लेख किया गया है| कहानियों के पात्रों में स्वाभाविकता, सहजता, आत्मसमर्पण की भावना, देश के सुरक्षा हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर करने की अद्भुत क्षमता स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है| 'संतोषी भोला' नामक कहानी में भोला के संतोष, स्वामिभक्ति, ईमानदारी तथा उसके स्वच्छ अंतर्मन का

वर्णन किया गया है। कहानी के दृश्यों, घटनाओं के परिवर्तित होने के साथ-साथ पात्रों में भी एक प्रकार से जीवन का संचार हो जाता है| वे किसी के सहारे न खड़े होकर बल्कि स्वयं के पैरों पर खड़े हुए स्वावलंबी बनते दिखाई पड़ते हैं|

पंचम अध्याय आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के स्त्री पात्रों से सम्बंधित है। आज की नारियां पुरुषों से कम नहीं हैं। वे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना जानती हैं। चाहे राजनीति का क्षेत्र हो या युद्ध का मैदान, चाहे थल सेना हो या वायु सेना किसी भी क्षेत्र में स्त्रियाँ पुरुषों से कम नहीं हैं| 'जैसलमेर की राजकुमारी' कहानी में आचार्य जी रत्नवती के साहस और पराक्रम, उसकी दृढ़ प्रतिज्ञा एवं कुशल नेतृत्व के द्वारा आज की नारियों में उसी वीरता और पराक्रम का संचार करना चाहते हैं| 'अम्बपालिका' कहानी में स्त्री पात्र अम्बपालिका के माध्यम से बौद्धकालीन संस्कृति, सामाजिक परिवेश, रीति-रिवाज, मान्यताएं, नृत्यकला आदि का चित्रण किया गया है|

षष्ठ अध्याय में आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों में शिल्प सौष्ठव का वर्णन है| साहित्य की किसी भी विधा में यदि शिल्प का प्रयोग न हो, तो वह पाठकों के मन पर पूर्ण रूप से प्रभाव डालने में सक्षम नहीं हो पाता है| शिल्प के अंतर्गत कथानक, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, संवाद- कौशल, कहावतें, मुहावरे, लोकोक्ति, देशकाल और वातावरण, भाषा-शैली तथा उद्देश्य आदि के विषय में वर्णन किया गया है| भाषा और शैली के क्षेत्र में शास्त्री जी एक मंजे हुए लेखक और कलाकार के रूप में सामने आते हैं। आचार्य जी की भाषा स्पष्ट, सुष्ठु, सरल, प्रवाहपूर्ण एवं प्रभावमयी है|

उपसंहार:

उपसंहार में निष्कर्षतः यह बताने का प्रयास किया गया है कि संस्कृति एवं समाज मनुष्य जीवन के आधार स्तम्भ हैं| इसके अभाव में हम सभ्य मानव की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं| भारतीय संस्कृति हमें एकता का पाठ पढ़ाती है| भारतीय संस्कृति पूर्णता की ओर एक प्रकार की यात्रा है। इसलिए यह अधूरी होते हुए भी, साकांक्ष होती हुई भी, सापेक्षता को लेकर चलती है| भारतीय संस्कृति को जीवित रखने के लिए हमें समय-समय पर इसकी रक्षा भी करनी होगी| इसके अतिरिक्त यहाँ पर हमने सभी अध्यायों के सारतत्व को भी समझाने का प्रयास किया है| शास्त्री जी का सम्पूर्ण साहित्य मानव मस्तिष्क का परिस्कार करके उन्हें सुसंस्कृत जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करता है|

आभार:

मेरा यह शोध प्रबंध कई स्तर पर मेरे अपनों के सहयोग से अंतिम रूप को प्राप्त कर सका है, जिनका मार्गदर्शन रूपी प्रसाद समय-समय पर आवश्यकतानुसार मुझे मिलता रहा है| अतः मेरा यह पुनीत कर्तव्य बनता है कि मैं उन सभी लोगों के प्रति आभार अर्पित करूं।

सर्वप्रथम मैं अपने पहले गुरु अर्थात् माता-पिता (श्रीमती जानकी देवी- श्री हरीराम मौर्य) के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने अपनी क्षुद्र कमाई में भी अपने दायित्वों का बखूबी निर्वहन करते हुए मुझे इस स्तर पर पहुँचाया कि मैं पी - एच. डी. कर सकूं| आज भी मुझे अच्छी तरह याद है कि घर की पारिवारिक स्थिति अत्यंत दयनीय एवं जर्जर होने के बावजूद भी मेरे माता- पिता कभी हिम्मत नहीं हारे| आज जहाँ एक बच्चे को पालना मुश्किल का काम है, वहीं पर मेरे पिताजी सब्जी का व्यवसाय करके हम चार भाइयों को बराबर पढ़ाते और हम सबका पेट भरते रहे|

कभी भी किसी चीज की कमी महसूस नहीं होने दी| रात हो या दिन, गर्मी हो या सर्दी , बरसात हो या धूप कभी भी इसकी चिंता न करते हुए, किसी प्रकार से परिवार की गाड़ी को धीरे-धीरे खींचते हुए, अपने चारों बेटों को समाज में सर उठाकर जीने के योग्य बनाया| चार भाइयों में सबसे छोटा होने के कारण मुझे कुछ ज्यादा ही उनसे प्यार और सम्मान मिलता रहा। जब भाइयों ने भी कुछ कमाना शुरू किया, तब से मेरी पढ़ाई में तो जैसे पंख लग गए हों| आज उसी का परिणाम है कि मैं जीवन के थपेड़ों और झंझावातों को पार करता हुआ इस मुकाम पर पहुँच पाया हूँ कि आपके समक्ष अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत कर सकूं| मैं अपने माता-पिता के चरणों में ताउम्र नत-मस्तक हूँ|

मैं अपनी परम पूजनीय एवं विदुषी शोध निर्देशिका डॉ. अनीता शुक्ल जी के प्रति भी अपना विशेष आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे 'आचार्य चतुरसेन शास्त्री की कहानियों के सांस्कृतिक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य करने की प्रेरणा दी एवं शोध के दौरान सरलता, सहजता, सौहार्दपूर्ण और अपने कुशल नेतृत्व द्वारा मेरा पग-पग पर मार्गदर्शन भी किया| उनके इस आत्मीयपूर्ण व्यवहार के परिणाम स्वरूप मेरे हृदय में उनके प्रति अपार श्रद्धा एवं उच्च स्थान है| डॉ. अनीता शुक्ल जी ने अपने कुशल निर्देशन में मुझे जो शोध कार्य करने का सुयोग्य अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं अपने अन्तःकरण से बारम्बार उनका आभार व्यक्त करता हूँ|

इसके अतिरिक्त हिंदी विभाग के सभी प्राचार्यों / कर्मचारियों एवं विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. कल्पना गवली जी के प्रति भी आभार अर्पित करता हूँ, जिनका मुझे सदैव सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता रहा। एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. शन्नो पाण्डेय जी के प्रति भी विशेष आभार प्रकट करना चाहता हूँ, जिन्होंने शोध के दौरान अपने बहुमूल्य सुझावों द्वारा मेरा मार्गदर्शन

किया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. शिव प्रसाद शुक्ल जी के भी प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूं, जिनके सहयोग से मैं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय वड़ोदरा तक शोध कार्य हेतु पहुँच सका|

अपने माता-पिता के साथ-साथ मैं अपने भाइयों और भाभियों (दीपचन्द्र मौर्य- पुष्पा देवी, श्याम किशोर- संगीता देवी, मनोज कुमार- सावित्री देवी), भतीजा और भतीजी (जयकिशन मौर्य, रवि किशन मौर्य, अर्पित मौर्य, दीपिका मौर्या, अर्पिता मौर्या, लाडो मौर्या, आरूषी मौर्या), पत्नी तथा पुत्र (ममता मौर्या, जलज उर्फ़ जन्नत, जिगर उर्फ मन्नत), जीतेन्द्र कुमार मौर्य- सुषमा देवी, पंकज मौर्य- किरन देवी, मनोज मौर्य- सुमन देवी के भी प्रति अपना आभार प्रकट करता हूँ|

शोध के दौरान मेरे कुछ शोधार्थी मित्रों ने भी अपना सहयोग दिया जिनमें, दिलीप कुमार, डॉ. मिथिलेश मिश्रा, मनीष पाण्डेय, कृष्णा त्रिपाठी, विनोद शुक्ल, संगम यादव, डॉ.अंजना मिश्रा, डॉ. ईश्वर भाई इत्यादि हैं।

काल्विन इंटर कालेज महमूदाबाद सीतापुर जहाँ पर कि वर्तमान समय में मैं एक अध्यापक के रूप में तथा एसोसिएट एन.सी.सी. ऑफिसर के पद पर भी कार्यरत हूं। मेरे शिक्षक साथियों ने भी कहीं न कहीं अपनी नवीन उर्जा एवं उत्साह के द्वारा मुझे प्रोत्साहित किया, जिनमें आदरणीय ताराचन्द्र पटेल जी, राम अभिलाख वर्मा, बृजेंद्र कुमार वर्मा, देवेन्द्र कुमार वर्मा, सना सिद्दीकी, नसरीन बानों, राधा मौर्या आदि हैं। इन सबके भी प्रति आभार व्यक्त करता हूँ|

मैं उन सभी विद्वानों के प्रति भी अपना आभार अर्पित करना चाहता हूँ जिनकी पुस्तकों, पत्रों में छपे हुई लेखों के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुझे लाभ मिला है। साथ ही साथ उन लोगों को भी जिन्होंने मुझे साक्षात्कार के माध्यम से अभीष्ट जानकारी प्रदान की|

इस शोध प्रबंध में शास्त्री जी की कहानियों, उपन्यासों आदि में वर्णित संस्कृति के द्वारा मनुष्य के रहन-सहन, खान-पान की विधियों, व्यवहार प्रतिमानों, आचार-विचार, रीति-रिवाज, परम्पराएँ, कला कौशल, संगीत नृत्य, भाषा साहित्य, धर्म दर्शन, आदर्श विश्वास एवं जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालना मेरा मुख्य उद्देश्य रहा है, जिससे लोगों को समाज में भारतीय संस्कृति को अपनाने, उसका सम्मान करने तथा आवश्यकतानुसार कुप्रथाओं को समाज के अनुरूप परिवर्तित करते हुए एक पारम्परिक व आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा मिले| व्यक्ति फैशन के दौर में न पड़कर बल्कि भारतीय संस्कृति के अनुरूप अपनी जीवन शैली का निर्माण करे|

मैं अपना यह शोध ग्रन्थ श्रेष्ठ विद्वतजनों के समक्ष मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत कर रहा हूँ| यह आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि मेरा यह छोटा सा प्रयास विद्वतजनों को रुचिकर एवं सारगर्भित लगेगा| फिर भी यदि कहीं पर किसी भी प्रकार की गलतियाँ या शोध प्रबंध टंकित करने में कुछ त्रुटियाँ रह गईं हों तो मैं इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ|

जगदीश मौर्य